Bodhi-Path Year 2020 July Issue Volume 19 Page No 35-42

बौद्ध साहित्य का विशाल भण्डार ''त्रिपिटिक''

डॉ0 कामेश्वर प्रसाद
एम0ए0,पी0एच0डी0,
पोस्ट डाक्टोलर रिसर्च फैलो प्राप्त
नव नालन्दा महाविहार,
(मानित विश्वविद्यालय), नालन्दा
बिहार, भारत 803111

बुद्धकाल साहित्यिक गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। बौद्ध साहित्य से हमारा तात्पर्य बौद्ध वांगमय से हैं साहित्य शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है, (1) प्रथम साहित्य का अर्थ सीमित है जो रचनात्मक एवं कलात्मक साहित्य है तथा जो रचनात्मक होता है एवं जिसके द्वारा लोकोत्तर आनन्द की अनुभूति होती है। (2) दूसरा अर्थ अधिक व्यापक है जिसके संचित ज्ञान राशि का समस्त भण्डार समाहित होता है। इसी को दूसरे शब्दों में वांगमय कहा जाता है। इसके अंतर्गत रचनात्मक या कलात्मक साहित्य तथा अतिरिक्त ज्ञान–विज्ञान से सम्बद्ध समस्त विद्यायें परिगणित होती है। इस तरह धर्म, दर्शन, भाषा शास्त्र (व्याकरण), शिक्षा, नीति, आयुर्वेद, विज्ञान, इतिहास, कला, विज्ञान तथा प्रविधि आदि सभी शास्त्र इसमें समाहित हो जाते हैं।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य और वांगमय दोनों के एक ही शब्द ''लिटरेचर'' का प्रयोग होता है। अंग्रेजी के इस शब्द के अनुवाद के कारण ही हिन्दी में साहित्य के मूल अर्थ साथ–साथ उसके व्यापक अर्थ का बोध होता है। इस कारण यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक था कि बौद्ध साहित्य से हमारा तात्पर्य उस बौद्ध वांगमय से है जिसके अंतर्गत बौद्ध कवियों द्वारा लिखित अथवा बौद्ध धर्म से सम्बद्ध विषयों पर अन्य विद्वानों द्वारा लिखित काव्य, नाटक, कथा,

आख्यायिका आदि के साथ–साथ बौद्ध धर्म से सम्बद्ध समस्त धर्म ग्रंथों, अवदान–कथाओं तथा उपदेशात्मक आख्यान का भी समावेश हो जाता है।

बौद्ध वांगमय बौद्ध धार्मिक ग्रंथों की प्रधानता है। विशाल वांगमय अनेक भाषाओं और बहुत बड़े कालखण्ड से निर्मित होता रहा। यह कालखंड लगभग 1500 वर्षों तक रहा। इसके अंतर्गत इतिहास के कालक्रमानुसार मौर्यकाल, शुंगकाल कुषाणकाल, गुप्तकाल, हर्षकाल एवं पाल काल आते है। इस लंबी काल अवधि में बौद्ध धर्म का चरमोत्कर्ष भी हुआ और ह्रास भी जो बौद्ध धर्म कुषाण काल तक न केवल समस्त भारत में अपितु लंका, मध्य एशिया चीन एवं विश्व तक पहुँच गया था, वही भारत में ह्रास होने लगा। जिन–जिन देशों में यह धर्म हजारों वर्षों तक वर्तमान था उन सब की अपनी–अपनी भाषाओं में बौद्ध वांगमय की रचना होती रही। भारत से बौद्ध धर्म के उच्छेद के बाद विशाल भारतीय बौद्ध वांगमय यहाँ से विलुप्त हो गया। भारत के जिन विशाल ग्रंथागारों जैसे–सारनाथ, नालन्दा, विक्रमशीला में वह साहित्य संग्रहित था। क्रुरता पूर्वक नष्ट कर डाला। जिसने नष्ट किया संदेहास्पद है। फिर भी बौद्ध भिक्षु अपने साथ बौद्ध धर्म के जिन अमूल्य ग्रंथों को लेकर हिमालय क्षेत्र के विभिन्न देशों, नेपाल, सिक्किम, भुटान, तिब्बत, आदि देशों में चले गये वहाँ वह बौद्ध साहित्य राजकीय पुस्तकालयों और बौद्धमठों के संरक्षण में सुरक्षित रहा।

इस विशाल बौद्ध वांगमय की रचना कब से प्रारम्भ हुई यह बताना अत्यंत कठिन कार्य है। गौतम बुद्ध के समय लिखने की प्रथा प्रचलित थी, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता है क्योंकि बुद्ध की मृत्यु के प्रायः दो सौ वर्षों बाद सम्राट अशोक ने अपने उपदेशों को साम्राज्य के विभिन्न भागों में शिलाओं पर लिखवाया था। लेखन की यह विधि केवल 200 वर्षों में ही नहीं विकसित हुई होगी। अतः निश्चय ही गौतम बुद्ध के समय लिखने की प्रथा विद्यमान रही।

फिर भी इस ग्रंथों को बुद्ध के स्वयं लिखने या उनके काल में उनके शिष्यों द्वारा लिखने का प्रमाण नहीं मिलता। इस ग्रंथों का संकलन बुद्ध के निर्वाण के बाद विभिन्न संगीतियों के माध्यम से इस प्रकार हुआ है।

प्रथम संगीति :–

तथागत के निर्वाण के पश्चात् प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन उनके शिष्यों द्वारा किया गया। उस समय बौद्ध भिक्षुओं के समक्ष यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि सम्यक सम्बुद्ध के वचनों को किस प्रकार सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित किया जा सकता है। इस संबंध में **विनयपिटक के ''चुल्लवग्ग''** में कहा गया है **कि ''अच्छा हो आवुसो।** हम विनय और धर्म का संगायन करें, सामने अधर्म प्रकट हो रहा है, धर्म हटाया जा रहा है, विनयवादी को हीन किया जा रहा है। इसी उद्देश्य से बुद्ध परिनिर्वाण के चतुर्थ मास में राजगृह के वैभार गिरि की सप्तपर्णी गुफा के सम्मुख एक सभा हुई, जिसे प्रथम संगीति कहा जाता है। इसमें प्रमुख भिक्षु **महाकश्यप, आनन्द, उपालि स्थविर** उपस्थित थे तथा **अनुरूद्ध, वंगीस, पूर्ण एवं कात्यायन की** भूमिका सराहनीय थी।

प्रथम संगीति में सभी निर्णय एक मत से हुए हों, यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यदि सुभद्र भिक्षु के वचनों को प्रमाण माना जाय तो हमें स्वीकार करना होगा कि संघ भेद का बीज यहीं से प्रारम्भ हो जाता है।

जहाँ तक प्रथम संगीति की ऐतिहासिकता का प्रश्न है यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि प्रथम बौद्ध संगीति हुई अवश्य थी, जिसका उल्लेख हमें **विनयपिटक के चुल्लवग्ग, दीपवंस, महावंस, सुमंगलविलासिनी, महाबोधिवंस, महावस्तु, मंजुश्रीमूलकल्प,** तारानाथ के बौद्ध धर्म का इतिहास बुद्धघोष कृत समन्तपासादिका की निदान कथा, तिब्बती दुल्ब आदि में प्राप्त होता है। वस्तुतः प्रथम बौद्ध संगीति में विनय, धम्म (सुत्त) का ही संगायन हुआ, आचार्य बुद्धघोष

अभिधम्म के संगायन का भी उल्लेख करते है। आचार्य बुद्धघोष के विचार से पूर्ण सहमति न रहने पर भी वह निःसंकोच स्वीकार किया जा सकता है कि प्रथम संगीति में ही पिटको की आधारशिला निर्मित हो गयी। महाकश्यप 500 भिक्षुओं को साथ लेकर गये अथक प्रयास ने 5 हजार वर्षो के लिए बौद्ध धर्म को स्थायी कर दिया। इस संगीति ने बुद्धवचनों का सर्वप्रथम संग्रह कर बौद्ध धर्म को अमर बना दिया। अतः इसका ऐतिहासिक महत्व भुलाया नहीं जा सकता।

द्वितीय बौद्ध संगीति :–

भगवान् बुद्ध के निर्वाण के सौ वर्ष के अनन्तर द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन वैशाली में कालाशोक के शासन काल में हुई। इस संगीति में 700 भिक्षुओं ने भाग लिया, इसीलिए इसको ''सप्तसतिका'' भी कहते है। तथागत के परिनिर्वाण के प्रायः सौ वर्षों के बाद यह भिक्षुओं के विनय से सम्बद्ध विवाद का निर्णय करने के लिए आमंत्रित की गयी। विवाद के विषय दस थे जो विनयपिटक के चुल्लवग्ग के ''सप्तशतिकास्कन्धक'' में इसक उल्लेख है। उस समय बुद्ध के परिनिर्वाण के 100 वर्ष बीतने पर वैशाली निवासी वज्जिपुत्तक भिक्षु दस वस्तुओं का प्रचार करते थे– भिक्षुओं (1) श्रंग्लिवण–कल्पविहित हैं (2) द्वियंगुलकल्प (3) ग्रामान्तर कल्प (4) आवास कल्प (5) अनुमति कल्प (6) आचीर्ण कल्प (7) अमथित कल्प (8) जलोगीपान (9) अदशक (10) जातरूप–रजत विहित है। वज्जिसंघ के भिक्षु उपर्युक्त दस विषयों को विहित (बुद्धानुमोदित) कहते थे और स्थविरवादी भिक्षु विहित नहीं मानते थे। आध्यत्मिक दृष्टिकोण से यह विवाद अत्यंत गौण था, परन्तु धार्मिक दृष्टि से विवाद महत्वपूर्ण रहा तथा ''काकण्डपुत्र पश'' के प्रबल विरोध एवं प्रयास के फलस्वरूप यह संगीति राजा कालाशोक नन्दिवर्द्धन के संरक्षण में हुई। इस संगीति के कारण भविष्य में चलकर एक स्थविर से ही अठारह सम्प्रदाय उद्भुत हुए। प्रथम संगीति के समय ही विनय एवं धम्म का संगायन हुआ। आचार्य बुद्धघोष के

वर्णनानुसार बुद्ध वचनों का तीन पिटकों, पंच निकायों एवं नौ अंगों में पुनः अनुसंगायन इस समय किया गया। इसकी ऐतिहासिकता निर्विवाद रूप से सत्य है। इस संगीति का उल्लेख हमें विनयपिटक, दीपवंस, महावंस आदि में सर्वत्र समान मिलता है।

तृतीय बौद्ध संगीति :–

सम्राट अशोक के राज्याभिषेक के सत्रहवें वर्ष में और तथागत के परिनिर्वाण के 236 वर्ष बाद तृतीय बौद्ध संगीति का संगायन पाटलिपुत्र में सम्पन्न हुआ। इस संगीति का उल्लेख दीपवंस, महावंस, समन्तपासादिका एवं कथावत्थु में है। विनयपिटक के चुल्लवग्ग में तिब्बती और चीनी के महायानी बौद्ध साहित्य में एवं सम्राट अशोक के किसी अभिलेख में इस संगीति के संगायन का कोई उल्लेख नहीं है। वास्तव में सम्राट अशोक के समय तक बौद्ध धर्म 18 सम्प्रदायों में विभक्त हो चुका था। यह संगायन विशेष रूप से स्थविरवादियों का रहा साथ ही साथ अन्य मतावलम्बियों ने इसे स्थविरवादी भिक्षुओं की ही सभा मानकर इसका उल्लेख बौद्ध संगीतियों के रूप में न किया गया हो।

सम्राट अशोक के समय तक आते–आते बौद्ध धर्म में बहुत से दूसरे धर्मानुयायी सुख–सुविधा के लोभ से कृत्रिम बौद्ध भिक्षु बन गये। संघ के अन्तर्गत तथागत के वचनों में अनास्था रखने वाले लोग भी वेश परिवर्तित करके भिक्षु रूप में संघ के सदस्य बन गये। फलस्वरूप इन भिक्षुओं द्वारा ''विनय'' की अवहेलना प्रारम्भ हो गयी। इन्हीं उद्देश्यो से प्रेरित होकर **मोग्गलिपुत्त तिष्य** ने एक बहुत बड़ी सभा पाटलिपुत्र के अशोकाराम में करवाय। भिक्षुओं के मत–परीक्षा के अनन्तर मिथ्यादृष्टि रखने वाले 60 हजार भिक्षुओं का निष्कासन किया गया। इस संगीति में सम्राट अशोक स्वयं उपस्थित थे। साथ ही साथ पाटलिपुत्र की इस सभा में अन्तिम रूप से बुद्ध वचनों का स्वरूप निर्धारित किया

गया और नौ महीने में भिक्षुओं ने मोग्गल्लिपुत्त तिष्य के सभापतित्व में बुद्ध वचनों का संगायन किया। इसी समय **मोग्गल्लिपुत्त** ने मिथ्यावादी 17 बौद्ध सम्प्रदायों का निराकरण करते हुए **''कथावत्थु''** नामक ग्रंथ की रचना की जिसे अभिधम्मपिटक के अंग के रूप में स्थान मिला।

इस संगीति का महत्व बौद्ध साहित्य के इतिहास में अत्यधिक है, क्योंकि त्रिपिटकों का संगायन इसी संगीति में वृहद रूप में हुआ। इस संगीति में ''कथावत्थुप्रकरण जैसे ग्रंथ के साथ अनेक सुत्त गाथाएं और वस्थु भी जो अन्य भिक्षुओं द्वारा प्रोक्त थे उन्हें सुक्तानुकुल मानकर त्रिपिटक में सम्मिलित कर दिया गया।

चतुर्थ बौद्ध संगीति :–

तृतीय बौद्ध संगीति में मोग्गलिपुत्त तिष्य ने सर्वास्तिवाद का भी खण्डन किया था। अतः प्रथम एवं द्वितीय शताब्दी में सम्राट **कनिष्क** ने इन सर्वास्तिवादियों के समर्थन में **चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन** कराया। इस संगीति में पार्श्व प्रधान बनाये गये। पार्श्व कनिष्क द्वारा स्थापित पुरूषपुर के आश्चर्य महाविहार के निवासी थे। इस संगीति में 500 भिक्षु पार्श्व के साथ 500 भिक्षु वसुमित्र के साथ आये परन्तु इसमें महायानियों का प्रतिनिधित्व तर्क संगत प्रतीत नहीं होता क्योंकि नागार्जुन के बाद ही महायानियों का विस्तार विशेष रूप से हुआ था राजतरंगिणी के अनुसार नागार्जुन कनिष्क के पश्चात हुए थे।

यह संगीति 100वीं ईस्वी में काश्मीर के कुण्डलवन विहार वन में बुलायी गयी थी। इसमें अभिधर्म महाविभाषा की रचना हुयी थी। ह्वेनसांग का कथन है कि सुत्तपिटक विभाषा, विनय विभाषा एवं अभिधर्म विभाषा की रचना भी इसी समय हुई तथा इनमें से प्रत्येक में एक लाख श्लोक है। इस संगीति का मुख्य कार्य इन भाष्यों की रचना है। बौद्ध साहित्य में इन संगीतियों का विशेष महत्व

है क्योंकि इन्हीं के माध्यम से हमारे समक्ष बौद्ध साहित्य का विशाल भण्डार उपस्थित है जिसे त्रिपिटक कहते है जिसका विवरण इस प्रकार हैः–

त्रिपिटक :–

भगवान बुद्ध ने जनसाधारण की जिस बोली–भाषा में अपना उपदेश दिया वह उस समय कोशल तथा मगध में बोली जाती थी इसीलिए इसका नाम ''मागही (मागधी)'' भाषा था। इसे ही आजकल ''पालि'' भाषा के नाम से व्यवहृत करते हैं। बुद्ध के वचन तथा उपदेशों के प्रतिपादक ग्रंथों को पिटक (पेटारी) कहते हैं। पिटक तीन हैं – **विनय पिटक, सुत्त पिटक, अभिधम्म पिटक,** इनके भीतर कई विभाग सम्मिलित हैं, जो इस प्रकार हैं :–

विनय पिटक :–

1) पाराजिक (2) पाचितिय (3) महावग्ग (4) चुल्लवग्ग (5) परिवार।

सुत्तपिटक :–

1) दीघनिकाय (2) मंज्झिम निकाय (3) संयुक्त निकाय (4) अंगुत्तर निकाय (5) खुदकनिकाय।

खुदक निकाय के अंतर्गत ग्रंथ है।

1) खुदक पाठ (2) धम्मपद (3) उदान (4) इतिवुत्तक (5) सुत्तनिपात (6) विमानवत्थु (7) पेतवत्थु (8) थेरगाथा (9) थेरीगाथा (10)अपदान (11) बुद्धवंश (12) चरिया पिटक (13) जातक (14) महानिद्देश (15) चुल्लनिद्देश

अभिधम्म–पिटक

1) धम्मसंगिणि (2) विभंग (3) धातु कथा (4) पुग्गलप××ाति (5) कथावरथु (6) यमक (7) पट्टान इत्यादि।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. परमानन्द सिंह, बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज, पृ0 11,12
2. बुद्धघोष, अट्ठसालिनी, देवनागरी संस्करण पुना, 1942 पृ0 23
3. विनयपिटक, अनुवादक–राहुल सांस्कृत्यायन, पृ0 541
4. दीघनिकाय, महापरिनिर्वाण सुत्त
5. परमानन्द सिंह, बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज, पृ0 13
6. अट्ठसालिनी, देवनागरी संस्करण, पुना, 1922, पृ0 23
7. महावंस, 3/37, 3/371
8. विनयपिटक , अनु0–राहुल सांस्कृत्यायन, पृ0 441, 442
9. महावंस, चौथा परिच्छेद 17
10. महावंस, 4, 14, 16
11. भरत सिंह, उपाध्याय, पालि साहित्य का इतिहास–साहित्य सम्मेलन प्रयाग, चतुर्थ संस्करण, 1983, पृ0 95–96
12. महावग्ग 1, 248, 14
13. बुद्धचर्या, भूमिका, भाग–1, पृ0 02
14. महावंस, अनु0 भदन्त आनन्द कौसल्यायन 5, 278
15. वाटर्स, जिल्द–1, पृ0 270